जामिया मिल्लिया इस्लामिया
जनसंपर्क एवं मीडिया समन्यवक कार्यालय

02 नवंबर 2020

प्रेस विज्ञप्ति

जामिया में 'इंडिया एज़ अ रेलक्टंट पाॅवरः प्रॉमिस एंड पोटेंशियल' विषय पर ऑनलाइन लेक्चर

जामिया मिल्लिया इस्लामिया के एमएमएजे एकेडमी ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज ने 'भारत एक अनिच्छुक ताक़तः आशा और संभावनाएं' विषय पर ऑनलाइन लेक्चर का आयोजन दिनांक 26 अक्तूबर 2020 को किया। हडसन इंस्टीट्यूट, वॉशिंगटन डी सी के 'इनिश्यटिव ऑन द फ्यूचर ऑफ़ इंडिया एंड साउथ एशिया' की निदेशक डॉ अपर्णा पांडे ने यह व्याख्यान दिया। उन्होंने कई किताबें लिखी हैं, उनमें से प्रमुख हैं चाणक्य से मोदीः भारत की विदेश नीति का विकास' और पाकिस्तान की विदेश नीति की व्याख्या।

एमएमएजे एआईएस के कार्यवाहक निदेशक, प्रोफेसर अजय दर्शन बेहेरा ने स्पीकर का स्वागत किया और तेजी से बदलते अंतरराष्ट्रीय परिदृष्य में भारत खुद को कैसे स्थापित करे, इस पर अपनी बात रखी। उन्होंने शक्ति के कई आयामों की चर्चा करते हुए बताया कि किस प्रकार अपनी ताक़त को लेकर हर देश का रवैया अलग-अलग होगा।

डॉ अपर्णा पांडे ने भारत की शक्ति विशेषताओं, ख़ासकर इसकी विशाल आबादी के लाभ, आर्थिक क्षमता, इसकी बड़ी पेशेवर सेना और इसकी एकाधिक राजनीतिक प्रणाली के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने कहा कि भारत की ये विशेषताएं उसे कई देशों के लिए एक स्वाभाविक पार्टनर बना देंगी। ये विशेषताएं, भारत के महान भविष्य की गारंटी हैं। इसके अलावा दुनिया भर में बड़े पैमाने पर फैली भारतीय प्रवासियों की आबादी को भी इस संबंध में एक खास पूंजी माना जाता है।

उन्होंने, लक्ष्य को पाने के लिए नीतियां बनाने और वांछित कार्यों की दिशा में काम करने को लेकर महत्वकांक्षा और अनिच्छा के बीच द्वंद्व की स्थिति को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि इसके लिए भारत को बड़े पैमाने पर आर्थिक सुधार, मानव संसाधन विकास, स्वास्थ्य देखभाल, महिला सशक्तिकरण के साथ ही अपने पड़ोसियों और अन्य देशों के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध बनाए रखने पर खास ध्यान देना चाहिए। उन्होंने कहा कि भारत ने इस तरह के बहुआयामी लक्ष्यों को पाने में अच्छा प्रदर्शन नहीं किया है।

डा पांडे ने कहा कि महान शक्ति बनने महत्वकांक्षा की दिशा में भारत ने उसके अनुरूप कदम नहीं उठाए हैं। उनके अनुसार, दुनिया तभी नोटिस लेगी जब भारतीय शक्ति निर्माण के अपने इरादों को दिखाएगा। उन्होंने कहा कि इस लक्ष्य को पाने के लिए योगा, बालीवुड और ऐसी अन्य लोकप्रिय चीज़ो जैसी तथाकथित 'सॉफ्ट पावर' बातों से अलग सोचना और प्रदर्शित करना होगा।

उनके अनुसार, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, जापान और दक्षिण पूर्व एशियाई देश भारत को एक बडे खिलाड़ी के रूप में देखना चाहते हैं, लेकिन इसमें मुख्य अड़चन यह है कि इस दिशा में खुद, भारत द्वारा सराहनीय प्रयासों को किए जाने की कमी है।

डॉ पांडे ने कहा कि प्राचीन महान भारत दूसरी तरह के सांसारिक परिवेश में था, लेकिन आधुनिक भारत को महान शक्ति बनने के लिए आज की दुनिया के अनुरूप कदम उठाने होंगे, तभी वह दुनिया की एक महान शक्ति के तौर पर पहचाना जाएगा।

अहमद अज़ीम
जनसंपर्क अधिकारी एवं मीडिया समन्वयक